IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं की जीवन शैली में हो रहा बदलाव।

डॉ शर्मिला रानी
(विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

ओमप्रकाश धामू
(शोधार्थी)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

सारांश :–

वर्तमान समय में सोशल मिडिया का उपयोग आम व्यक्ति की दिनचर्या में किसी न किसी रूप में व्यक्ति एवं सामाजिक पारिवारिक संबंधों को प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष रूप से जुड़कर प्रभावित कर रहा है। व्यक्ति एक जिज्ञासु प्राणी होने के कारण अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है एवं आज सभी घटनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने का सबसे उपयुक्त साधन सोशल मीडिया अपनी महती भूमिका को निभा रहा है। सोशल मीडिया का जनमानस की वैचारिकी अभिव्यक्ति के सशक्त साधन के रूप में उभर कर सामने आया है। सोशल मीडिया के प्रचलन से देश विदेश, आसपास हो रही समसामयिक घटनाओं की त्वरित गति से सूचनाएं प्राप्त हो जाती है। यह मनोरंजन के साथ साथ आर्थिक लेन देन, शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, विभिन्न सूचनाओं को अविलंब आदान प्रदान करने, लोकतंत्र की अवधारणा "जनता का शासन जनता के लिए और जनता के द्वारा" पर आधारित है। जनता की आवाज शासन तक पहुंचाने एवं जनता को जागरूक बनाने में सोशल मीडिया की अहम भूमिका है। सोशल मीडिया ने सबसे ज्यादा युवाओं को बहुत प्रभावित किया है, जिसके कारण वर्तमान समय में उनकी जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन या बदलाव देखने को मिल रहा है।

प्रस्तावनाः–

सोशल मीडिया का उन वेब साइटों में अनुप्रयोगों के लिए एक सामूहिक शब्द है जो संचार,समुदाय आधारित ,इनपुट, वार्तालाप, दोस्तों, परिवार एवं विभिन्न समुदायों के साथ संपर्क में रहने, बातचीत करने, एक दूसरे की भावनाओं विचारों का आदान प्रदान करने के लिए विशेषत सोशल मीडिया एक सशक्त कम्यूनिकेशन का साधन बनता जा रहा है।

सोशल मीडिया ज्ञान, सम्मान, सेवाओं को एकत्रित करने के लिए विभिन्न नेटवर्किंग प्लेटफार्मों का उपयोग करता है। सोशल मीडिया ने देश दुनिया को बहुत ही नजदीकी ला दिया है, जिसके कारण कहीं भी कोई भी घटना या अन्य कार्यक्रम हो तुरंत सोशल मीडिया द्वारा जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

सोशल मीडिया सूचना तकनीकी क्रांति का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। सोशल मीडिया में मुख्यतः चार सामाजिक प्लेटफॉर्म की श्रेणी हैरू– सोशल नेटवर्किंग, मीडिया शेयरिंग, समुदाय पर आधारित नेटवर्क एवं समीक्षा बोर्ड नेटवर्क द्वारा व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ने, जानकारी साझा करने, नेटवर्क का ध्यान कंटेंट पर करने, सोशल नेटवर्किंग का मुख्य फोकस गहन चर्चा करने एवं विभिन्न नेटवर्कों की समीक्षा करने के लिए उपयोग किया जाता है।

सोशल मीडिया का सदुपयोग होने पर कम समय में बहुत सार्थक जानकारी, ज्ञान में वृद्धि, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक संबंधों, सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक पक्षों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती है।

मनुष्य एक सामाजिक व जिज्ञासु प्राणी होने के कारण अपने चारों ओर जो भी घटनाएं घटित हो रही है, उनको सदैव जानने की चेष्टा करता रहता है, जिसमें सोशल मीडिया अपनी महती भूमिका का निर्वाह कर रहा है। सोशल मीडिया द्वारा सबसे ज्यादा युवा वर्ग प्रभावित हुआ है और कर रहा है।

सोशल मीडिया का प्रारंभ हुट सुइट के अनुसार 1997 हुआ था जो माइस्पेस, नेक्सोपिया और द फेसबुक जैसी साइटों के रूप में विकसित हुआ था। 30 जून को वर्ल्ड सोशल मीडिया दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो विश्व भर में पहली बार 30 जून 2010 को सोशल मीडिया दिवस के रूप में मनाया गया था।

सोशल मीडिया का प्रारंभ 1990 के दशक के मध्य जियोसिटीज, क्लासमेट.कॉम एवं सिक्स डिग्री.कॉम जैसे प्लेटफॉर्मों के आविष्कार के साथ हुई। उस समय इंस्टेंट मैसेजिंग चेट क्लाइंट मौजूद थे, लेकिन सिक्स डिग्री अद्वितीय था क्योंकि यह इटली की पहली ऑनलाइन सेवा थी जिसे लोगों का गुमनाम रूप से ही नहीं बल्कि उनके वास्तविक नामों का प्रयोग करके कनेक्ट करने के लिए डिजाइन किया गया था।

सोशल मीडिया इंटरैक्टिव तकनीक है जो वर्चुअल समुदायों व नेटवर्क के माध्यम से सूचना, विचार, रूचियो,अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के निर्माण व साझाकरण की सुविधाएँ प्रदान करता है। सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म डिजिटल उपयोगकर्ताओं को एक दूसरे के साथ संवाद करने, वार्तालाप करने, जानकारी साझा करने एवं सामग्री बनाने की अनुमति प्रदान करता है। आज सूचना तकनीकी क्रांति में दूरसंचार क्रांति ने इतना सोशल मीडिया द्वारा प्रभावित किया है जिसके बारे में कभी भी सोचा ही नहीं गया था।

सोशल मीडिया के विभिन्न उदाहरण जैसे फेसबुक जो एक निःशुल्क सोशल नेटवर्किंग साइट्स है जहाँ उपयोगकर्ता अपनी प्रोफाइल बनाकर फोटो, ऑडियो, विडिओ को अद्यतन करता है। अपने विचारों को एक दूसरे के साथ साझा करना, संदेश के द्वारा अभिव्यक्ति जानना, परिवारजनों, मित्रों के साथ संपर्क बनाए रखना।

लिंक्डइन सोशल साइट है जो व्यवसाय समुदाय के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें पंजीकृत सदस्य ऐसे लोगों से नेटवर्क बना लेते हैं जिन्हें वे पैशेवर रूप से जानते हैं। प्रिंटेरेस्ट जो छवियों को साझा करने इसका मुख्य ध्यान दृश्य है, जो किसी छवि (चित्र) को क्लिक करते ही उपयोगकर्ता मूल स्रोत पर पहुँच जाता है। ट्विटर,एक्स सैंडल भी एक निःशुल्क माइक्रो ब्लॉगिंग सेवा है जहाँ वे ट्वीट नामक लघु पोस्ट को प्रसारित करते हैं।

विकिपीडिया एक स्वतंत्र मुक्त सामग्री विश्वकोश है, जिसे एक सहयोग समुदाय के माध्यम से बनाया गया है। इस पर पंजीकृत कोई भी व्यक्ति प्रकाशन के लिए लेख बना सकता है। सोशल मीडिया का सर्वाधिक प्रभाव युवा पीढ़ी पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसने युवाओं को बहुत अधिक प्रभावित किया है। सोशल मीडिया में युवाओं पर प्रभाव संबंधी विभिन्न अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों से ज्ञात होता है कि जहाँ सोशल मीडिया युवाओं को सकारात्मकता प्रदान करता है। वही इनके अत्यधिक उपयोग से नकारात्मकता का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता है। ज्यादा सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में मानसिक उन्माद, निद्रा की कमी, अश्लीलता की भावना, मनोरोग, कम दिखाई देना आदि नकारात्मकता की भावना प्रायः देखी जाती है। सोशल मीडिया के प्रचलन से पूर्व विचारों की अभिव्यक्ति, संवाद आदि के बारे में बहुत कम देखने को मिलता था परन्तु समाज परिवारों के संबंध बहुत प्रगाढ़ देखने को मिलते थे। कही भी कोई भी धार्मिक समागम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, राजनीतिक, मनोरंजनात्मक गतिविधियाँ आदि में बड़ी आत्मीयता के साथ सम्मान मिलता था। चाहे कोई भी त्यौहार हो, दीपावली, होली, रक्षाबंधन आदि में एक दूसरे की घरों में जाकर इन त्योहारों का बड़ा आनंद लिया जाता था और आत्मसंतुष्टि होती थी, लेकिन आज सोशल मीडिया के कारण सामाजिक संबंध व पारिवारिक संबंधों में सीमितता के कारण दिन प्रतिदिन कमी देखी जा सकती है। सोशल मीडिया द्वारा एक दूसरे को संदेश भेज कर इतिश्री कर ली जाती है। इससे पारिवारिक संबंधों में विघटन की स्थिति पैदा हो जाती है। क्योंकि आज चाहे युवा हों या युवतिया सभी के पास सोशल मीडिया के विभिन्न नेटवर्कों के प्लेटफार्म से कोई भी वंचित नहीं है। मोबाइल फोन स्मार्टफोन द्वारा जान अनजान न होने पर भी सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म फेसबुक, ट्विटर एक्स हैंडल इंस्टाग्राम द्वारा अपनी प्रोफाइल बनाकर फोटो,वीडियो, व्हाट्सएप पर शेयर करते रहते हैं और कई बार यह भी देखने को मिलता रहता है की सोशल मीडिया अनेक प्रकार के पारिवारिक व सामाजिक संबंधों को निभाने में व लोगों को जागरूक करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कई बार देखा व सुना जाता है कि भारत का निवासी युवा– युवती अन्य देश के युवा–युवतियों से सोशल मीडिया द्वारा मित्रता स्थापित कर लेते हैं। वे अनजान होते हुए भी सोशल मीडिया द्वारा इतने प्रभावित हो जाते हैं कि जब मित्रता प्रगाढ़ हो जाती है। तो वे सब कुछ भूलकर एक दूसरे से मिलने को आतुर हो जाते हैं। कई बार समाचार पत्रों में भी पढ़ा है कि अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सोशल मीडिया द्वारा संबंध बनाकर युवा युवती मिलते रहते है।

सोशल मीडिया द्वारा नैतिकता के मूल्यों का भी हास हो रहा है। अनेक आपराधिक घटनाओं में वृद्धि हो रही है। सोशल मीडिया पर युवाओं द्वारा ज्यादा उपयोग होने से जब किसी क्षेत्र में सफलता या रोजगार प्राप्त नहीं होता है,तो वे मानसिक रूप से परेशान होकर अनेक आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे देते हैं और साथ ही साथ नशे के भी शिकार हो जाते हैं। आजकल आर्थिक क्षेत्र में भी लेनदेन ऑनलाइन होने के कारण युवा लोगों को ठगी का शिकार भी बना लेते हैं।

युवाओं द्वारा सोशल मीडिया की आवश्यकता से ज्यादा उपयोग करने से सामाजिक पारिवारिक संबंधों में गिरावट देखी जा सकती है। युवाओं को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों के उपयोग से उनकी जीवन शैली में निरंतर बदलाव देखा जा सकता है।

सोशल मीडिया के शोध के उद्देश्यः—

सोशल मीडिया के उपयोग से पारिवारिक, सामाजिक संबंधों में युवाओं के व्यवहार व आचरण, जीवनशैली में क्या बदलाव हो रहे हैं? शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है।

सोशल मीडिया द्वारा युवाओं में सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता।

सोशल मीडिया द्वारा सामाजिक पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने प्रोत्साहन करने की भावना में वृद्धि।

सामाजिक पारिवारिक संबंधों में जागरूकता बढ़ी है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावः—

सोशल मीडिया का अधिकाधिक। उपयोग होने से वैश्विक परिदृश्य, समाज, परिवार में इसका सकारात्मक प्रभाव भी दिखाई पड़ते हैं। जो निम्नानुसार।

सोशल मीडिया विश्वभर के जन समुदाय को एक दूसरे से जोड़ने में मदद करता है एवं देश दुनिया के समसामयिक मुद्दों को जानने पहचानने में बहुत मदद मिलती है।

सोशलमीडिया द्वारा सामाजिक पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने, प्रोत्साहन करने में भरपूर सहयोग मिलता है एवं नए संबंधों को बनाने में भी मदद मिलती है।

सोशल मीडिया, परिवार, समाज मित्र, रिश्तेदारों के मद्देनजर संबंध बनाने एवं उनको जोड़ने में बहुत सहायक है।

सोशल मीडिया का सही सदुपयोग होने से ज्ञान में वृद्धि होती है।

सूचना तकनीक क्रांति मे सोशल मीडिया के संचार का व्यापक विकास होता है।

सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म व्हाट्सएप से वायस कॉल, वीडियो कॉल द्वारा आमने सामने का आभास कर सामाजिक सम्पर्क का माध्यम बनता जा रहा है।

सभी प्रकार के संबंधों की प्रगाढ़ता में सोशल मीडिया बहुत उपयोगी साबित हो रहा है। और इसका दायरा दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

सोशल मीडिया समाज में जागरूकता पैदा करने का एक सशक्त साधन के रूप में सहायक है।

सोशल मीडिया द्वारा सामाजिक संबद्ध अधिक बनते हैं।

सोशल मीडिया युवाओं को रोजगार के भरपूर अवसर प्रदान कर रहे हैं।

सोशल मीडिया इंटरनेट कनेक्शन के साथ डिजिटल डिवाइस का प्रयोग कर कहीं भी किसी भी समय एक दूसरे से जुड़ सकते हैं।

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव।

जहाँ सोशल मीडिया का उपयोग उपयोगी होता है सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, वहीं इसका अत्यधिक उपयोग दुरुपयोग होने से नकारात्मक प्रभाव भी देखा जा रहा है। नकारात्मक प्रभाव निम्न प्रकार से है।

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव यह है कि इसका ज्यादा उपयोग इसके ज्यादा उपयोग ने ही मानव युवा युवतियों को इतना प्रभावित किया है कि सोशल मीडिया को एक आवश्यक अंग की भाँति समझने लगे हैं। जिस तरह से शरीर के किसी अंगको अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार से सोशल मीडिया को भी व्यक्ति से पृथक नहीं किया जा सकता है।

सोशल मीडिया द्वारा विश्वभर की समसामयिक घटनाओं या विश्व परिदृश्य अतिशीघ्र ज्ञात हो जाता है। लेकिन सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाऐ भ्रामक ज्यादा प्रतीत होती हैं। फर्जी खबरों को वायरल करना गलत सूचना प्रेषित करना आज प्राथमिक स्रोत बन गया है, जिससे इसकी समाज में गहरी पहुँच ने हालात को और भी बदतर बना दिया है।

सोशल मीडिया पर युवाओं की अधिक व्यस्तता होने से मनोरोग के शिकार भी हो रहे हैं। उनकी जीवन शैली में पर्याप्त बदलाव देखा जा रहा है जैसे एकाग्रता में कमी,अनिद्रा की समस्या, अकेलापन, चिड़चिड़ापन, मानसिक तनाव आदि समस्याएं,उत्पन्न हो रही है।

सोशल मीडिया पर फर्जी अफवाएं झूठी खबरों का दुष्प्रभाव समाज विरोधी हो सकती है, जिससे पारिवारिक, सामाजिक संबंधों में खटास या तनाव उत्पन्न हो जाते हैं।

सोशल मीडिया शक्तिशाली लोगों, विभिन्न कंपनियों, संस्थाओं और राजनीतिक दलों द्वारा अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए दुष्प्रचार फैलाने में सोशल मीडिया का सर्वाधिक उउपयोग् किया जाता है जिससे हर कोई दिग्भ्रमित हो जाता है।

सोशल मीडिया में ट्रोलिंग व बदमाशी नकारात्मक पहलू है कोई भी, कहीं भी घटनाएं घटित हो तुरंत आग की तरह वायरल हो जाती है जिसके परिणाम स्वरुप सामग्री एवं उनसे जुड़े व्यक्ति लगातार बदमाशी व ट्रोलिंग के शिकार हो जाते हैं।

सोशल मीडिया में ट्रोलिंग एक गंभीर मुद्दा है जो पीड़ित को बहुत ज्यादा मानसिक आघात पहुंचा सकता है, जिसके कारण व्यक्ति के व्यवहार व दैनिक जीवन पर बुरा असर पड़ने से पीड़ित व्यक्ति कई बार मानसिक तनाव के कारण अपनी जीवन की लीला को भी समाप्त कर लेता है।

सोशल मीडिया के उपयोगकर्ता युवा युवतियों के व्यवहार में बदलाव देखा जा सकता है, क्योंकि आज की पीढ़ी की युवाओं में सहनशक्ति का अभाव होने के कारण उनके दैनिक व्यवहार में चिड़चिड़ापन, नैतिक मूल्यों में कमी, लड़ाई झगड़ा करना, गलत गतिविधियों में शामिल होकर अनैतिक कार्यों को अंजाम देने में रुचि उत्पन्न कर घटनाओं में शामिल हो जाते हैं।

सोशल मीडिया द्वारा पारिवारिक, सामाजिक संबंधों में भी कमी देखी जा सकती है क्योंकि सभी लोग सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्मों पर इतने व्यस्त है कि व्यक्ति के आमने सामने होने की स्थिति में कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारी आग की भांति वायरल होने से अनेक घटनाएँ लूटपाट, आगजनी, सासमार्वजनिक संपत्ति को नुकसान जिससे समाज में सामाजिक तनाव उत्पन्न हो जाता है।

सोशल मीडिया का सर्वाधिक असर युवा युवतियों में देखा जाता है। विभिन्न सर्वेक्षणों से ज्ञात भी हुआ है कि युवा सबसे ज्यादा सोशल साइट पर व्यस्त रहने से अश्लील छवि या वीडियो पोर्न को भी देखते हैं जिसके कारण उनमें अश्लीलता की भावना सदै बनी रहने की वजह से मानसिक रूप से भटककर बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम दे देते हैं।

सोशल मीडिया का युवाओ के प्रभाव पर सुझाव

सोशल मीडिया का सर्वाधिक असर युवाओं में देखने को भरपूर मिल रहा है। युवा व बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सोशल साइट्स को अभिभावक या पारिवारिक सदस्य द्वारा समय समय पर मॉनीटरिंग किया जाना आवश्यक है।

कभी भी युवाओं व बच्चों की गलती होने पर उन्हें डांटना नहीं चाहिए बल्कि अभिभावक अपने पास बैठाकर बड़े लाड़ प्यार से उन गलतियों के बारे मे अवगत कराएं ताकि वे भविष्य में किसी भी प्रकार की कोई गलतियाँ नहीं करें।

अभिभावक को प्रतिदिन बच्चे व युवाओं की दैनिक गतिविधियों के बारे में विचार विमर्श करते रहना चाहिए। जैसे अध्ययन, खेल, कूद, दोस्ती आदि की जानकारी प्राप्त करते रहना चाहिए।

जब कभी भी बच्चों व युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है। तो अभिभावक के सामने ही उपयोग किया जाए ताकि युवाओं पर हमेशा नियंत्रण बना रहे।

अभिभावकों को हमेशा बच्चों एवं युवाओं के मध्य मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए ताकि युवा सोशल मीडिया के बारे में देखी गई संपूर्ण जानकारी को उनके समक्ष साझा कर सकें।

सोशल मीडिया पर युवा वर्ग को सबसे अधिक अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों को अधिकाधिक देखने का प्रयास करना चाहिये जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी तथा समाज संस्कृति के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए।

सोशल मीडिया द्वारा सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रम को बढ़ावा मिलता है।

सोशल मीडिया के द्वारा लोगो में जागरूकता एवं जिज्ञासा बढ़ रही है। क्योंकि इसकी अनेक प्लैटफॉर्मों द्वारा विभिन्न सरकारों द्वारा जनहित की सूचनाओं का आदान प्रदान होने से लोगों के जीवन में व्यापक बदलाव देखा जा रहा है।

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक, भ्रामक, हिंसक या दहशत फैलाने वाले सूचनाएं प्रेषित नहीं करनी चाहिए क्योंकि इन घटनाओं को देखने से युवा वर्ग आक्रामक हो जाता है। और इस प्रकार की घटना से समाज में तनाव उत्पन्न हो जाता है। बल्कि सोशल मीडिया पर ऐसी जानकारी साझा करनी चाहिए जो युवाओं को कुछ सीखने सिखाने व भविष्य में आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करें।

सोशल मीडिया का सही सदुपयोग करना चाहिये ताकि मनोरंजन के साथ साथ युवाओं में ज्ञान की भी वृद्धि हो सके।

सोशल मीडिया का उपयोग ज्यादा होने से युवाओं को मानसिक रूप से इतना कमजोर कर दिया है जिसके कारण उनकी एकाग्रता में कमी, चिड़चिड़ापन, व्यवहार में परिवर्तन, एकांकीपन आदि मानसिक रोग के लक्षण प्रायः देखे जा सकते हैं। तथा उनकी पारिवारिक सदस्यों के मध्य भावनात्मक दूरी भी बढ़ती जा रही है। इन शब्द मुद्दों को ध्यान में रखकर सोशल मीडिया के दुष्परिणाम से बचना चाहिए। और सभी युवाओं व व्यक्तियों को जागरूक बनाना चाहिये।

सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों को बनाने में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहा है। इसमें और अधिक ध्यान देने की जरूरत है ताकि जनमानस को अधिकाधिक सोशल मीडिया के विभिन्न नेटवर्किंग साइट से जोड़ा जा सके।

निष्कर्षः—

सोशल मीडिया ने आज सभी वर्ग को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। विश्वभर के परिदृश्य को घर बैठे बैठे जान सकते हैं। यह ज्ञान में अप्रत्याशित वृद्धि कर रहा है। सोशल मीडिया ने लोगों में जागरूकता बढ़ाने में अहम भूमिका अदा की है। समाज में कोई भी पहलू हो चाहे राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, मनोरंजनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक सभी क्षेत्रों में इसने अपनी महती भूमिका को निभाने का प्रयास किया है। सोशल मीडिया द्वारा राजनैतिक दल सरकार द्वारा सभी जनहित की सूचनाएँ,धार्मिक संस्थाओं के कार्यक्रम, आर्थिक क्षेत्र में लेनदेन, समाचार पत्र, फिल्मी दुनिया आदि के लिए बहुत उपयोगी एवं कारगर साबित हुआ है। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, आदि के द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को एक दूसरे को भेजकर अपनी अभिव्यक्ति की भावना व्यक्त करता है। वे एक दूसरे को कॉमेंट्स के द्वारा लाइक करके विचारों का आदान प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता है। सोशल मीडिया ने वैश्विक महामारी कोविड—19 में लोगों को जागरूक कर महामारी के बारे में जानकारी प्रदान की और वर्चुअल कॉन्फ्रेंसों के द्वारा डिजिटल रूप से बहुत ही वैश्विक परिदृश्य को जोड़ने के सार्थक प्रयास किए गए। तथा कोविद 19 ने युवाओं व बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में बहुत नवाचार स्थापित करके शैक्षणिक स्तर में सुधार, उनको घर बैठे बैठे ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के द्वारा शिक्षा प्रदान करने में महती भूमिका निभाई है। आज सोशल मीडिया की बादशाहत संपूर्ण समाज में सिर चढ़कर बोल रही है। हर आयु वर्ग के लोग इसकी गिरफ्त में है। अब तो इसकी चपेट में नाबालिग भी आचुके हैं।

इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस पॉलिसीज एंड पॉलिटिक्स ने सोशल मीडिया मेटर्स एंड यूथ ऑनलाइन लर्निंग ऑर्गेनाइजेशन के साथ भारतीय बच्चों व युवाओं में इंटरनेट के उपयोग पर अध्ययन किया गया है जिसके अनुसार देश की 80ः नाबालिगों ने प्रतिदिन औसतन 2 घंटे सोशल मीडिया का उपयोग किया है। जिसमें से 30ः में ऑनलाइन संवेदनशील सामग्री अपने दोस्तों के साथ साझा की। तथा 15ः ने ऑनलाइन प्रोनोग्राफी देखने की बात स्वीकार की हैं। इस प्रकार के सर्वे में सबसे ज्यादा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान से प्रतिक्रिया आई है।

यूनिवर्सिटी ऑफ मिडलसेक्स लंदन की रिपोर्ट के मुताबिक बच्चे एक बार पोर्न देखने के पश्चात उस साइट्स को बार बार खोजने व देखने का प्रयास करते रहते हैं। भारत में इस प्रकार के बच्चों की आयु 12से16 वर्ष की है। प्रोर्नोग्राफी के प्रभाव से बच्चे, युवा महिलाओं को एक शारीरिक सबंध(सेक्स) की वस्तु समझने लगते हैं एवं कम उम्र में यौन संबंध बनाने का प्रयास करते। हैं और उनमें असफल होने पर वे नशे के शिकार भी हो जाते हैं।

पोर्नोग्राफी से अपराध बढ़े हैं, इस पर प्रतिबंध के लिए चला रहे अभियान बेंगलुरु के एक गैर सरकारी संगठन रेस्क्यू के अनुसार मेट्रो शहरों में 10 वर्ष की आयु के बच्चे पोर्न देखते हैं। एनजीओ ने10 महाविद्यालयों के 400 छात्रों का अध्ययन किया, जिसमें यह पाया कि हिंसक पोर्नोग्राफी देखने वाले युवाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसमें कॉलेज के छात्र छात्राओं की संख्या में कोई विशेष अंतर नहीं है।

सोशल मीडिया की गिरफ्त में नाबालिग जाने से ये समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है। सोशल मीडिया के ही प्लेटफोर्म फेसबुक द्वारा बच्चो व व्यक्तियों के लापता या अपहरण जैसी घटनाएं होने पर प्रचार प्रसार करने एवं ढूंढने में बहुत अच्छी भूमिका का निर्वाह करता है। कई बार सोशल मीडिया द्वारा घरों से लापता, लावारिस, अपहरण लोगों को ढूँढने व मिलाने में मददगार साबित हो रहा है। इसके प्रभाव से आज लोगों में जागरूकता के कारण सरकारी कर्मचारी कार्यालयों में भी भ्रष्टाचार में कमी देखी जा सकती है। सोशल मीडिया द्वारा। छोटी सी छोटी बात लीक होने पर आग की तरह फैल जाती है। जनमानस में जागरूकता बढ़ाने में सोशल मीडिया बहुत मदद कर रहा है।

सोशल मीडिया से युवाओं में नैतिक मूल्यों में निरंतर कमी देखी जा सकती है। इसका प्रमुख कारण सोशल मीडिया का अत्यधिक लगाव व उपयोग से युवाओं में सहनशक्ति का अभाव, उनके व्यवहार में परिवर्तन। एकाकीपन, मानसिक तनाव आदि। मानसिक रोग के शिकार हो जाते हैं।

युवाओं की जीवनशैली में भी आमूलचूल परिवर्तन देखा जा रहा है। उनका व्यवहार, बोलचाल, संवाद जहाँ सकारात्मकता प्रदान करता है, वही उसमें नकारात्मकता भी देखने को मिल रही है। यदि देश का युवा सोशल मीडिया के द्वारा अपने आप को एक अच्छा व्यक्ति बना लें तो यहाँ भी अपनी अच्छाइयों व रचनात्मकता से रूबरू करा सकते हैं।

संदर्भ सूचीः—

डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट पत्रिका डॉट कॉम।

ऋ डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.भास्कर.कॉम।

ऋ हिंदू जागरण।

ऋ इंटरनेट गूगल।

ऋ गुप्ता,वाई (2009) रूइलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

ऋ गुप्ता, विनीता (2018) रूसंचार और मीडिया शोध" वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

ऋ तिवारी, अर्जुन, (1994) जन संचार और हिंदी पत्रकारिता, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

ऋ उपाध्याय, अनिल कुमार (2005) रूपत्रकारिता एवं जनसंचार सिद्धांत एवं विकास, भारती प्रकाशन, दुर्गाकुंड, वाराणसी।

ऋ बजाज, पूनम, सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव, 17.9.2019, राजस्थान जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम 14

मीना, मीनाक्षी, वर्तमान में में युवाओं में सोशल मीडिया का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, राजस्थान जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 2020 वॉल्यूम 14।

बजाज, पूनम, 2021 कोरोना काल में युवा पीढ़ी और सोशल मीडिया, राजस्थान जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम 13

सक्सेना, रचना, (2016) वर्तमान समय में भारतीय युवाओं व बच्चों पर मीडिया का प्रभाव एक विवेचन शोध संचयन, जन जुलाई 7,अंक एक दो

नरुका ,संतोष, सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव, आईजेसीआरटी, 1801327,वॉल्यूम छह, इश्यू जनवरी 2018।